लेखक-
मोहम्मद यासीन

अधिगम

अधिगम का अर्थ- अधिगम का अर्थ सीखना होता है। अधिगम एक मानसिक प्रक्रिया है जिसमें बालक नए अनुभवों को सीखता है तथा इन्हीं अनुभव से वह परिपक्वता की ओर बढ़ता है। अधिगम जीवन पर्यन्त चलता है।



अधिगम की परिभाषाएं



- **वुडवर्थ के अनुसार-** नई सूचनाओं तथा नई प्रतिक्रियाओं को धारण करना ही अधिगम है।
- **गिलफोर्ड के अनुसार-** व्यवहार के कारण व्यवहार में होने वाला परिवर्तन अधिगम है।
- **गेट्स व अन्य के अनुसार-** अनुभव एवं परीक्षणों/प्रशिक्षण द्वारा व्यवहार में परिवर्तन होना ही अधिगम है।
- **स्किनर के अनुसार-** सीखना व्यवहार में उत्तरोत्तर सामंजस्य की प्रक्रिया है।
- **मर्फी के अनुसार-** अनुभव एवं व्यवहारिक दृष्टिकोण का परिमार्जन करना ही अधिगम है।
- **क्रो एण्ड क्रो के अनुसार-** आदतों, ज्ञान, अभिवृत्तियों एवं रुचियों का अर्जन करना ही अधिगम है।

अधिगम की विशेषताएं-

- अधिगम व्यवहार में परिवर्तन है।
- अधिगम सार्वभौमिक है।
- अधिगम लगभग स्थायी प्रकृति का परिवर्तन है।
- अधिगम प्रयोजन पूर्ण है।
- अधिगम व्यक्ति को समायोजन एवं अनुकूलन के लिए तैयार करती है।
- अधिगम विकास है।
- अधिगम जीवन पर्यन्त चलने वाली सतत् प्रक्रिया है।
- अधिगम रचनात्मक है।
- अधिगम अनुकूलन है।
- अधिगम वातावरण की उपज है।
- अधिगम खोज परक है।
- अधिगम व्यक्तिगत व सामाजिक दोनों है।
- अधिगम स्थानान्तरणीय है।
- अधिगम अनुभवों का संगठन है।
- अधिगम अभ्यास, प्रशिक्षण तथा अनुभव पर आधारित होता है।
- अधिगम पूर्ण परिस्थिति के प्रति अनुक्रिया है।

www.resultuniraj.co.in

लेखक-
मोहम्मद यासीन

अधिगम

अधिगम में सहायक कारक - दो प्रकार के होते हैं:

व्यक्तिगत कारक

- बालक की सीखने की जिज्ञासा
- बालकों की मौलिक पृष्ठभूमि
- सीखने का समय तथा अवधि
- परिपक्वता
- शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य
- सीखने वाले की अभिवृत्ति
- बुद्धि
- अधिगम प्रक्रिया
- अनुशासन
- शिक्षक की शिक्षण विधि

पर्यावरणीय कारक

- वातावरण का प्रभाव
- वंशानुक्रम
- सामाजिक वंशक्रम का ज्ञान
- व्यक्तित्व का विकास
- परिवार का वातावरण
- शिक्षा के अनौपचारिक साधन
- सामाजिक एवं सांस्कृतिक पर्यावरण
- कक्षा का भौतिक पर्यावरण
- मनोवैज्ञानिक वातावरण

By- मोहम्मद यासीन

:- अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक -:

- वातावरण
- बालको का शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य
- सीखने का समय व थकान
- सीखने की इच्छा
- सीखने की विधि
- परिपक्वता
- विषय सामग्री का स्वरूप
- प्रेरणा
- अध्यापक व सिखाने की प्रक्रिया
- समर्थ परिस्थिति

"सीखने/अधिगम के महत्वपूर्ण सिद्धांत" एक दृष्टि में

सिद्धांत	प्रतिपादक/प्रवर्तक
उद्दीपक अनुक्रिया सिद्धांत	एडवर्ड एल० थार्नडाइक
क्रिया-प्रसूत अनुबंधन सिद्धांत	बी० एफ० स्किनर
अनुकूलित अनुक्रिया सिद्धांत	आई० पी० पावलाव
समीपता का अनुबंध सिद्धांत	एडविन रे गुथरी
प्रबलन/पुनर्बलन सिद्धांत	सी० एल० हल
चिन्ह अधिगम सिद्धांत	एडवर्ड वेस टॉलमैन
सूझ या अन्तर्दृष्टि अधिगम सिद्धांत	मैक्स वर्दीमर
अधिगम का क्षेत्र सिद्धांत	कुर्ट लेविन
अधिगम संगठन का सिद्धांत	आर० एम० गैने
सामाजिक अधिगम सिद्धांत	अल्बर्ट बान्डूरा
अधिगम का मानवतावादी सिद्धांत	ए० एच० मैस्लो
अधिगम का स्मृति सिद्धांत	एडविन गुथरी

www.resultuniraj.co.in

अधिगम

लेखक-
मोहम्मद यासीन



Edward thorbdike

उद्दीपक - अनुक्रिया सिद्धांत-

प्रतिपादक - थार्नडाइक
निवासी - U.S.A. (अमेरिका)
सन् - 1913
प्रयोग - बिल्ली पर (भूखी)
उद्दीपक - मांस का टुकड़ा / मदली का टुकड़ा

उपनाम -
- प्रयास एवं भूल का सिद्धांत
- प्रयत्न एवं भूल का सिद्धांत
- आवृत्ति (बार-बार) का सिद्धांत
- S-R BOND का सिद्धांत
- अधिगम का बंध सिद्धांत
- सम्बंधवाद का सिद्धांत
- संयोजनवाद का सिद्धांत

थार्नडाइक का मानना है कि अधिगम की प्रक्रिया में शारीरिक और मानसिक क्रियाओं का किसी न किसी मात्रा में सम्बंध होता है इसी से जब किसी व्यक्ति के समक्ष किसी परिस्थिति में कोई उद्दीपन होता है तो वह उद्दीपन व्यक्ति को किसी विशेष प्रतिक्रिया के लिए प्रेरित करता है। यदि उद्दीपन के प्रति अनुक्रिया सुखद होती है तो वह उसे पुनः दोहराता है क्योंकि उसे संतोष मिलता है और बार-बार उसे दोहराकर वह उस व्यवहार को सीख लेता है यदि उद्दीपन के प्रति अनुक्रिया दुखद होती है तो उसे नहीं दोहराया जाता और उसे सीखा नहीं जाता। अर्थात् उद्दीपन (S) अनुक्रिया (R) के मध्य एक घनिष्ठ सम्बंध स्थापित हो जाता है।



प्रयोग, बिल्ली पर- भूखी बिल्ली को एक ऐसे संदूक में बंद किया गया जिसके दरवाजे में एक लीवर लगा था जिसके खुलते ही संदूक खुलता था और बिल्ली बाहर आकर भोजन प्राप्त कर सकती थी भोजन इस प्रकार रखा गया कि बिल्ली अंदर से उसे देख सकती थी बिल्ली इस बात को नहीं जानती थी कि संदूक में कोई लीवर लगा है जिसे खोलने से वह बाहर आकर भोजन कर सकती थी वह भोजन बिल्ली के लिए उद्दीपन था वह बाहर आने के लिए अनेक प्रयास (अनुक्रिया) करती रही कई प्रयासों के बाद अचानक उसका पैर लीवर पर पड़ा और दरवाजा खुल गया और बाहर आकर भोजन किया इस प्रक्रिया को अनेक बार दोहराया गया हर बार उसे भूखा रखकर यह क्रिया दोहराई गई इस प्रकार प्रयास और त्रुटि द्वारा बिल्ली ने लीवर खोलना सीख लिया

निष्कर्ष-
1. अधिगम का आधार उद्दीपन - अनुक्रिया (S-R) का सम्बंध होता है।
2. इस सिद्धांत के आधार पर बालकों में धैर्य - परिश्रम के प्रति आशा जाग्रत होती है।
3. छोटे बालकों को जूते पहनना, चम्मच से खाना आदि के लिए सिखा सकते हैं।
4. इस प्रकार एक विशिष्ट उद्दीपक का एक विशिष्ट प्रतिक्रिया से सम्बंध स्थापित हो जाता है जिसे उद्दीपक-अनुक्रिया द्वारा व्यक्त किया जाता है।

www.resultuniraj.co.in

लेखक- मोहम्मद यासीन

{ अधिगम }

सिद्धांत का शैक्षिक महत्व-

- बड़े व मन्दबुद्धि बालकों के लिए उपयोगी।
- धैर्य व परिश्रम के गुणों का विकास।
- सफलता के प्रति आशा।
- कार्य की धारणा स्पष्ट।
- गणित, विज्ञान, समाजशास्त्र आदि विषयों के लिए उपयोगी।
- शिक्षा के प्रति रुचि।

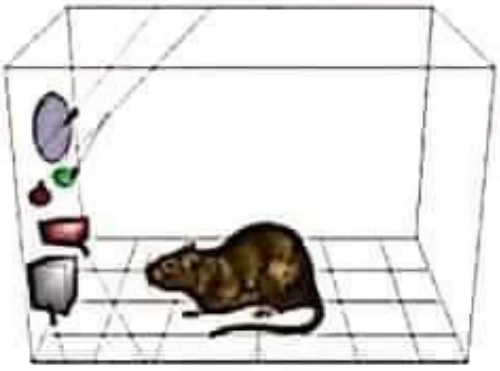
क्रिया-प्रसूत अनुबंधन सिद्धांत-

प्रतिपादक - बी० एफ० स्किनर
निवासी - U.S.A.
सन् - 1938
प्रयोग - चूहे पर (1938), कबूतर (1943)
उपनाम -
- R.S. का सिद्धांत
- सक्रिय अनुबंधन का सिद्धांत
- व्यवहारिक सिद्धांत
- नैमित्तिकवाद का सिद्धांत
- कार्यात्मक प्रतिबद्धता का सिद्धांत
- अनुकूलित - अनुक्रिया सिद्धांत
- अनुक्रिया - उद्दीपक सिद्धांत
- साधक अनुबंधन का सिद्धांत
- कार्यात्मक प्रतिबंधता का सिद्धांत



BURRHUS FREDERIC SKINNER

प्रयोग चूहे पर- इस सिद्धांत के प्रयोग में स्किनर ने स्किनर बॉक्स में भूखे चूहे को बंद किया, इस बॉक्स में घुमावदार मार्ग बनाये गये जिसमें चूहा दौड़ लगा सके इस बॉक्स में ऐसी व्यवस्था की गयी कि लीवर के दबने पर भोजन प्राप्त हो सके। संयोग से चूहे का पंजा उस लीवर पर पड़ गया और बॉक्स पर लगे भोजन पात्र से भोजन मिल गया। धीरे-धीरे चूहे द्वारा लीवर दबाने में कम समय लगने लगा और एक समय ऐसा आया कि चूहा जब भी बॉक्स में छोड़ा जाता वह बिना किसी गलती के लीवर को दबाता और भोजन प्राप्त करता। इस तरह चूहे ने बॉक्स में लीवर दबाने की अनुक्रिया को सीख लिया।



स्किनर का कबूतर पर प्रयोग- कबूतर पर प्रयोग के लिए स्किनर ने एक ऐसे बॉक्स का प्रयोग किया जिसमें कुंजी को खाने से दाना प्राप्त हो सके कबूतर जब इस कुंजी पर चोंच मारता है तो उसको दाने की प्राप्ति होती थी।

www.resultuniraj.co.in

⑤

लेखक- मोहम्मद यासीन

अधिगम

स्किनर के सिद्धांत-
- क्रिया-प्रसूत व्यवहार (Operant behaviour), उद्दीपक (stimulus) पर आधारित न होकर अनुक्रिया (Response) पर आधारित है।
- स्किनर ने परम्परागत थ्योरी (S-R) को R-S में बदल दिया।

नोट-
- क्रिया-प्रसूत का संबंध थार्नडाइक से होता है।
- क्लासिकी अनुबंधन में व्यवहार का प्रारम्भ बालक के द्वारा किया जाता है।
- यह सिद्धांत थार्नडाइक के प्रभाव के नियम पर आधारित है।
- स्किनर का मत है कि अनुक्रिया के लिए सदैव उद्दीपक होना आवश्यक नहीं है। कभी-कभी उद्दीपक की अनुपस्थिति में अनुक्रिया होती है।

सिद्धांत का शैक्षिक महत्व-
- अवांछित व्यवहारों को नकारात्मक पुनर्बलन प्रदान करके रोका जा सकता है।
- विद्यार्थी को तत्काल पुनर्बलन देना चाहिए।
- शिक्षार्थी का परिणाम शीघ्रातिशीघ्र घोषित करना चाहिए।
- इस सिद्धांत के द्वारा बालक में अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन किया जा सकता है।
- अभिक्रमित अनुदेशन, कम्प्यूटर सहायक शिक्षण मशीन आदि में पुनर्बलन देने के लिए इसी सिद्धांत का प्रयोग किया जाता है।
- स्किनर ने सिद्धांत बाह्य पुनर्बलन या पुरस्कार पर अधिक जोर दिया है।

शूक्ष्म शिक्षण- इस शिक्षण अपनी पाठ्य पुस्तक को छोटे-छोटे खण्डों में बांटकर प्रस्तुत करता है तथा प्रत्येक खण्ड की समाप्ति के बाद आवश्यक पुनर्बलन देता है।

अभिक्रमित अनुदेशन- इसके अन्तर्गत शिक्षक शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षण मशीनों एवं विभिन्न सहायक शिक्षण साधनों का उपयोग करता है।

स्किनर के अभिक्रमित अनुदेशन के चरण-
- व्यवहारिक उद्देश्य
- अनुदेशन के छोटे खण्ड, सूक्ष्म शिक्षण
- स्व-पदार्पण
- तत्काल प्रक्रिया
- प्रश्नपर विद्यार्थी की सक्रिय प्रतिक्रिया

थार्नडाइक अनुक्रिया सिद्धांत-

प्रतिपादक- आई० पी० पावलाव
निवासी - रूस
सन् - 1904
प्रयोग- कुत्ते पर
उपनाम-
- सम्बंध-प्रतिक्रिया सिद्धांत
- शास्त्रीय अनुबंधन सिद्धांत
- क्लासिकल अनुबंधन सिद्धांत
- अनुबंधन अनुक्रिया सिद्धांत
- अधिगम का प्राचीनतम सिद्धांत



IVAN PETROVICH PAVLOV

www.resultuniraj.co.in

{ अधिगम }

लेखक-
मोहम्मद यासीन

- प्रतिबद्ध - अनुक्रिया सिद्धांत
- अस्वभाविक अनुक्रिया का सिद्धांत

प्रयोग कुत्ते पर- मनोवैज्ञानिक पावलाव ने कुत्ते की लार ग्रंथि पर प्रयोग किया पावलाव ने कुत्ते को भोजन देने से पहले घंटी बजाई तथा यह प्रक्रिया कई दिनों तक दोहराई जैसे ही खाना देने से पहले घंटी बजाई थी कुत्ते के मुंह में लार आने लगती। इसके बाद केवल घंटी बजाई परन्तु खाना नहीं दिया तो देखा कि कुत्ता स्वाभाविक क्रिया (लार टपकना) करता है।



1. **अनुकूलन से पूर्व-** स्वाभाविक उद्दीपक (भोजन), स्वाभाविक अनुक्रिया (लार)
2. **अनुकूलन के दौरान-** अस्वाभाविक उद्दीपक (घंटी), स्वाभाविक उद्दीपक (भोजन), स्वाभाविक अनुक्रिया (लार)
3. **अनुकूलन के बाद-** अस्वाभाविक उद्दीपक (घंटी), स्वाभाविक अनुक्रिया (लार)

निष्कर्ष-
- पावलाव के प्रयोग में भोजन स्वाभाविक उद्दीपक है, जिसे अनअनुबंधित उद्दीपन कहा जाता है।
- भोजन को देखने पर कुत्ते के मुंह में लार आना एक स्वाभाविक अनुक्रिया है जिसे अनअनुबंधित अनुक्रिया कहा गया।
- भोजन देने से पहले घंटी बजाना अनुबंधित उद्दीपक कहा है।

शैक्षिक महत्व-
- भय निवारण में सहायक
- सामाजीकरण में सहायक
- गणित शिक्षण में सहायक
- अभिवृत्ति विकास में सहायक
- स्वभाव व आदत निर्माण में सहायक
- अनुशासन विकसित में सहायक

पुनर्बलन का सिद्धांत / हल का सिद्धांत-



प्रतिपादक - सी॰ एल॰ हल
निवासी - U.S.A.
प्रयोग - बिल्ली और चूहे पर
उपनाम-
- चालक न्यूनता का सिद्धांत
- आवश्यकता की कमी पूर्ति का सिद्धांत
- यथार्थ अधिगम का सिद्धांत
- उद्दीपक प्रतिक्रिया सिद्धांत
- सतत् अधिगम का सिद्धांत
- सबलीकरण का सिद्धांत
- प्रबलन का सिद्धांत

CLARK L HAL

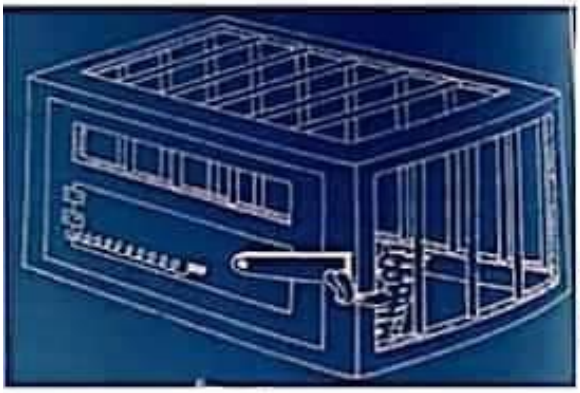
www.resultuniraj.co.in

लेखक-
मोहम्मद यासीन

{ अधिगम }

- अन्तर्नोद न्यूनता का सिद्धांत
- क्रमबद्ध अधिगम का सिद्धांत

प्रयोग - बिल्ली पर- क्लार्क एल॰ हल ने यह सिद्धांत थार्नडाइक के परीक्षण पद्धति पर दिया यह सिद्धांत आवश्यकता पर बल देता है। हल के अनुसार आवश्यकता अधिगम का आधार है। अर्थात् आवश्यकता ही चालक (DRIVE) है। आवश्यकता कमी होते ही चालक कम हो जाता है जिससे अधिगम की दर कम होने लगती है। क्लार्क एल॰ हल ने उद्दीपक के बजाय आवश्यकता पर बल दिया।



नोट- बी॰ एफ॰ स्किनर ने अधिगम के इस सिद्धांत को अधिगम का आदर्श एवं सर्वश्रेष्ठ अधिगम सिद्धांत कहा है।

शैक्षिक महत्व-
- बालकों में अधिगम के लिए प्रेरणा पर बल देता है।
- बालकों की क्रिया तथा आवश्यकता के मध्य सम्बंध होना चाहिए।
- पाठ्यक्रम का निर्माण बालकों की आवश्यकता के अनुसार करना चाहिए।
- अधिगम बालकों की आवश्यकता की पूर्ति करने वाला होना चाहिए।

मिलर एवं डॉलार्ड का प्रयोग- **लड़की पर-** मिलर एवं डॉलार्ड ने 6 वर्ष की एक लड़की पर प्रयोग किया जब भूखी लड़की भूखी थी तो उसे बताया कि किताबों की अलमारी में एक किताब के नीचे कैंडी दिपी हुई है। लड़की कैंडी को पाने के लिए किताबों को बाहर निकालना शुरू कर देती है और लगभग 210 सेकेण्ड के बाद वह सही किताब पा लेती जिसके नीचे कैंडी दिपी है। इसके पश्चात् उसे कमरे से बाहर भेज दिया जाता है। और उसी किताब के नीचे एक अन्य कैंडी दिपा दिया जाता है इस बार वह लड़की कैंडी को 86 सेकेण्ड में ढूंढ लेती है। इसके बाद पुनरावृत्ति पर 2 सेकेण्ड में खोज लेती है।



निष्कर्ष- कैंडी को पाना लड़की के चालक का प्रदर्शन है और पुस्तकों के नीचे कैंडी को ढूंढना उस चालक को कम करने के लिए की गयी अनुक्रिया है।

चिन्ह अधिगम सिद्धांत- प्रतिपादक- टोलमैन

टोलमैन का यह सिद्धांत उत्तेजना-प्रतिक्रिया सिद्धांत और संज्ञानात्मक क्षेत्र सिद्धांत को जोड़ता है। इस सिद्धांत को संकेत आधारित सिद्धांत तथा उद्देश्यपूर्ण व्यवहारवाद भी कहा जाता है।



उपभाग-
- अव्यक्त अधिगम सिद्धांत
- प्रतीकात्मक सिद्धांत

www.resultuniraj.co.in

अधिगम

लेखक - मोहम्मद यासीन

- चिन्ह प्रत्याकार सिद्धांत
- थार्न का मानचित्र सिद्धांत
- संभावना सिद्धांत
- संप्रयोजन/संप्रयोजन व्यवहारवाद सिद्धांत

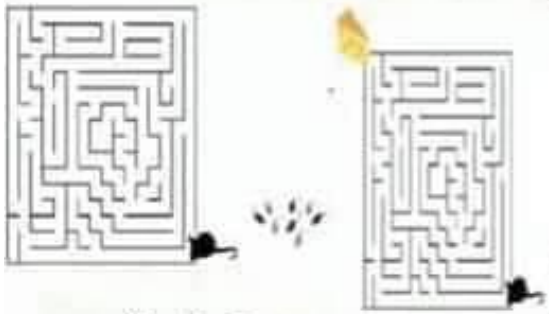
प्रयोग- चूहों के समूह पर - टॉलमैन ने चूहों के समूहों को 2 ग्रुप (A Group, B Group) में बांटा गया टॉलमैन ने A Group में भूलभुलैया में एक कोने में खाना रखा गया तो चूहों ने जितने जल्दी हो सके शॉर्ट रास्ते से खाना प्राप्त कर लिया लेकिन टॉलमैन ने B Group में भूल-भुलैया में खाना नहीं रखा तो चूहे यहां से वहां भटकते रहे इसलिए B Group में अधिगम को व्यक्त नहीं किया जा रहा है। फिर टॉलमैन ने B Group में दोबारा खाना रख दिया तो चूहों ने A Group से भी जल्दी अपने अधिगम को व्यक्त कर दिया।



निष्कर्ष- सीखने की क्रिया में प्राणी का व्यवहार उद्देश्यपूर्ण होता है।

टॉलमैन का विचार है कि उत्तेजक में उस समय अर्थ जुड़ता है जब वह किसी समय आवश्यकता और उद्देश्य की पूर्ति में सहायक होते हैं।

प्राणी संज्ञानात्मक योग्यताओं के सहारे सम्पूर्ण मानसिक परिस्थिति का एक मानसिक मानचित्र बना देता है। जिसे संज्ञानात्मक मानचित्र कहते हैं।



टॉलमैन के विचार से पुरस्कार, दण्ड, एवं अनुबंधन वे प्रतीक हैं जो उसे यह ज्ञान देते हैं कि उसे कौन मार्ग चुनना है।

शैक्षिक महत्व
- बालक सीखने की प्रक्रिया के दौरान उद्दीपकों के बीच परस्पर अर्थयुक्त सम्बंधों को स्थापित करना सीखता है।
- बालक के स्वीकृत व्यवहार का महत्वपूर्ण स्थान है जो उद्देश्यपूर्ण होता है।
- अधिगम में पुरस्कार देने पर व्यवहार दृढ़ हो जाता है।

सूझ या अन्तर्दृष्टि अधिगम सिद्धांत -

प्रतिपादक- मैक्स वर्दीमर
प्रयोगकर्ता- कोहलर
प्रयोग - चिम्पांजी/वनमानुष/सुल्तान
सहयोगकर्ता- कोफ्का
उपनाम- सीखने का गेस्टॉल्ट सिद्धांत-



max vardimer



kohlar

www.resultuniraj.co.in

Rajasthan Police Constable Syllabus PDF	Rajasthan Patwari Syllabus PDF
Indian Coast Guard Navik Syllabus PDF	Indian Air Force Airman Group X Y Syllabus Hindi pdf
SSC Junior Engineer Syllabus PDF	SSC CHSL Syllabus PDF
SSC SI ASI Syllabus PDF	*Rajasthan Police SI Syllabus PDF*
JNVST Syllabus PDF	*IBPS RRB Office Assistant Syllabus PDF*
SSC MTS Syllabus PDF	*SSC CGL Syllabus PDF*
UPSC NDA Syllabus PDF	*FCI Exam Syllabus PDF*

www.resultuniraj.co.in